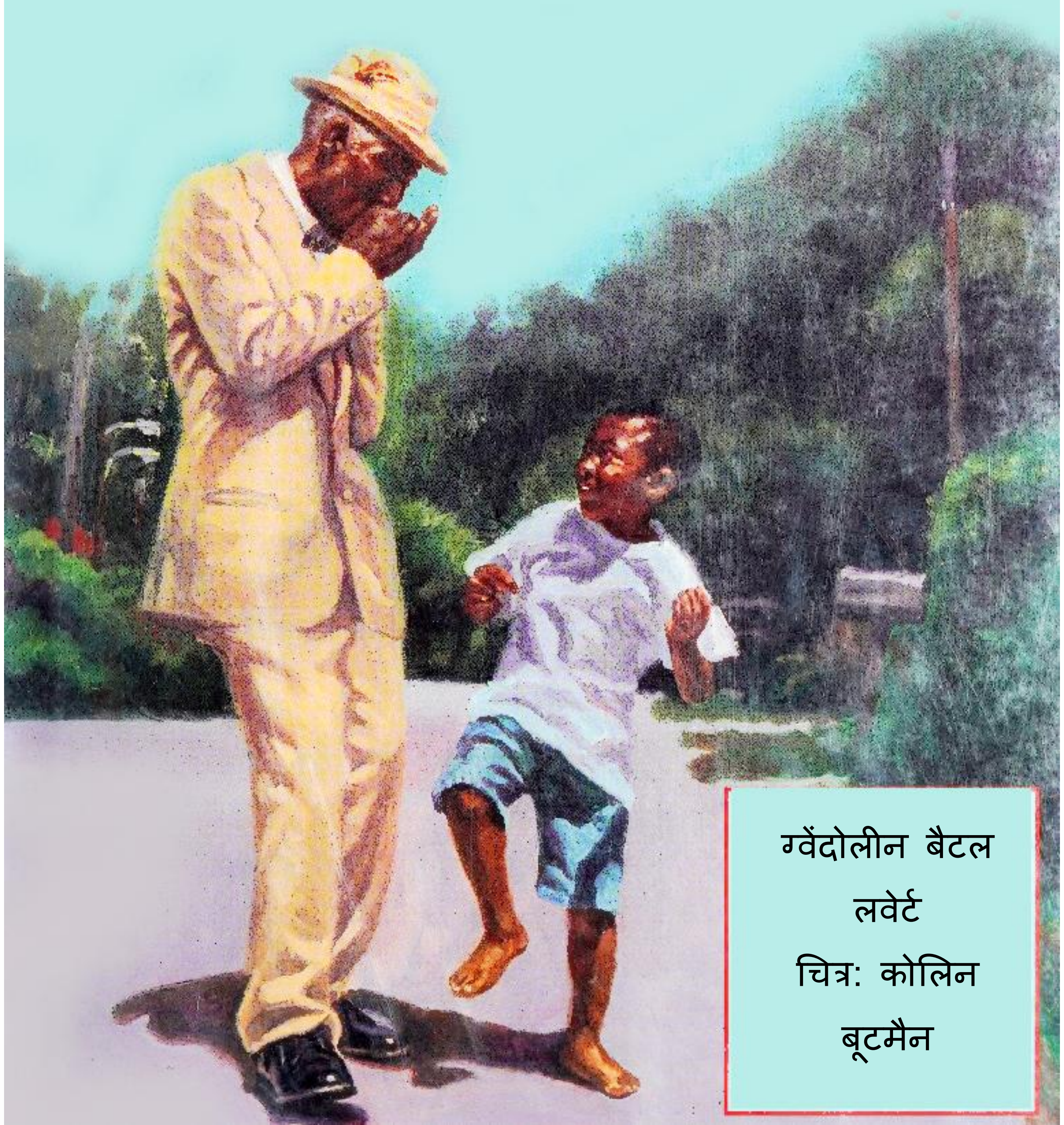
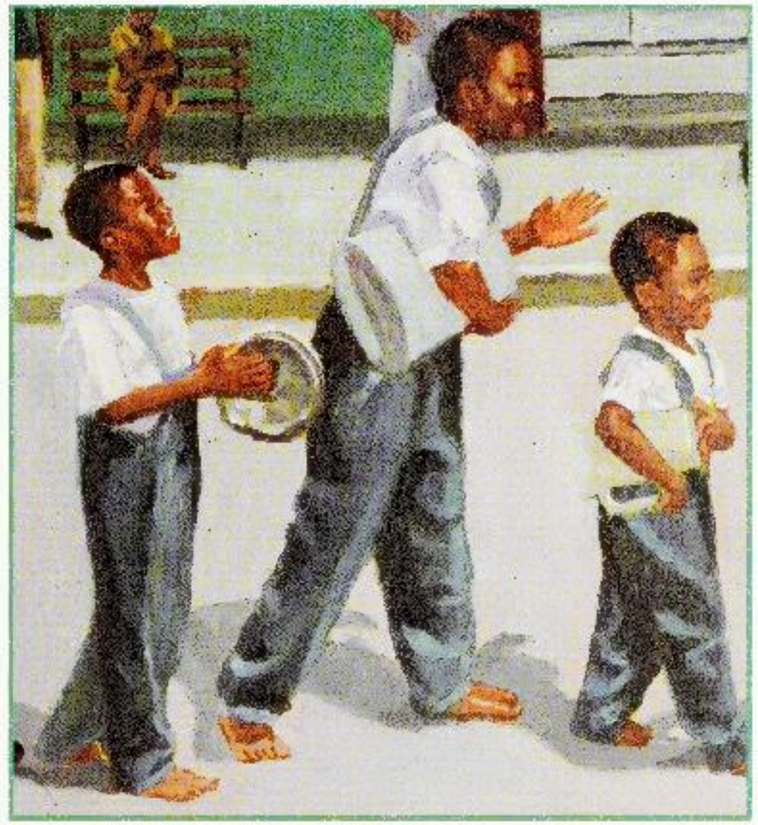
डैरिक का संगीत प्रेम



ग्वेंदोलीन बैटल लवेर्ट

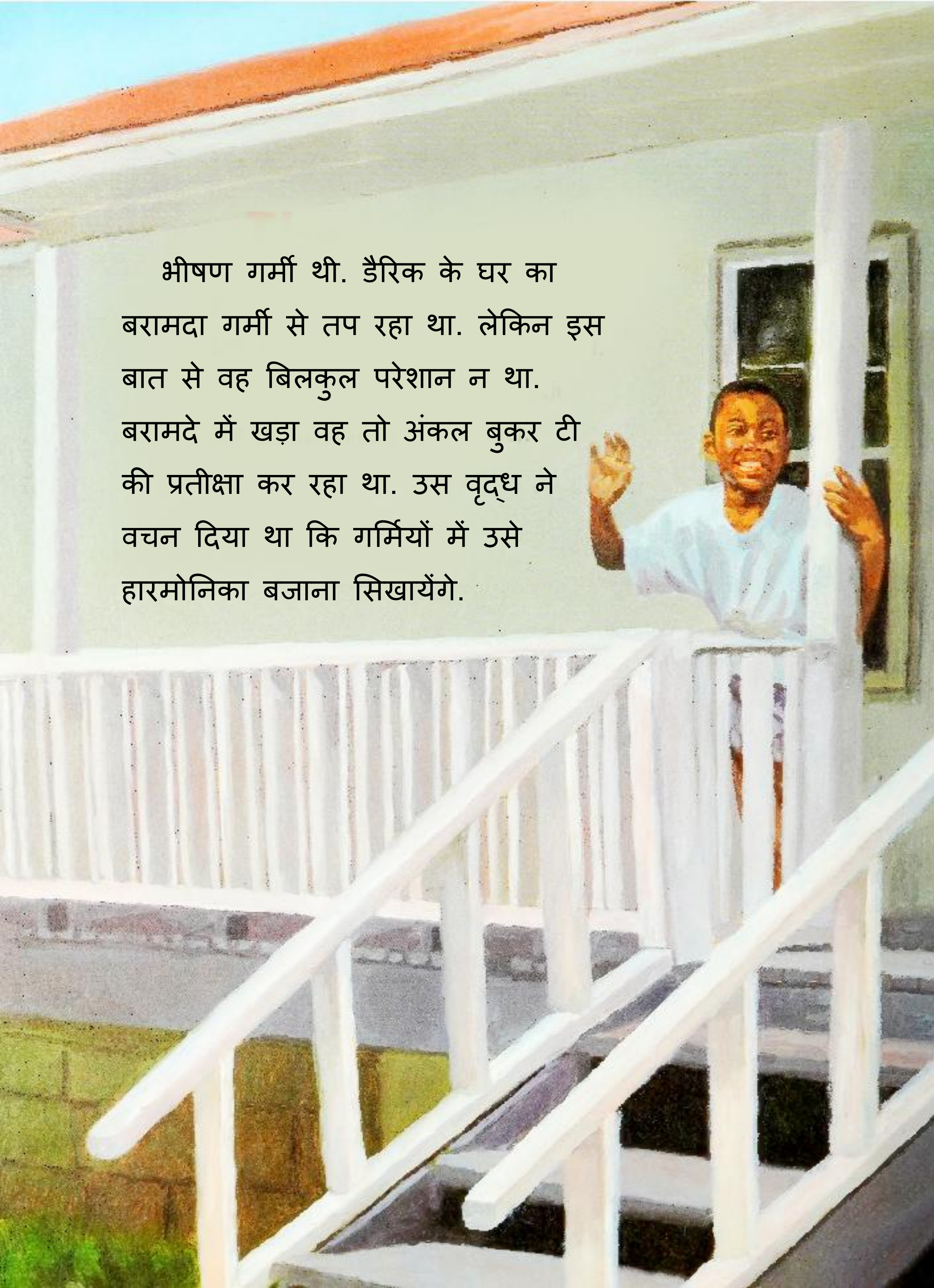
चित्र: कोलिन बूटमैन

डैरिक का संगीत प्रेम

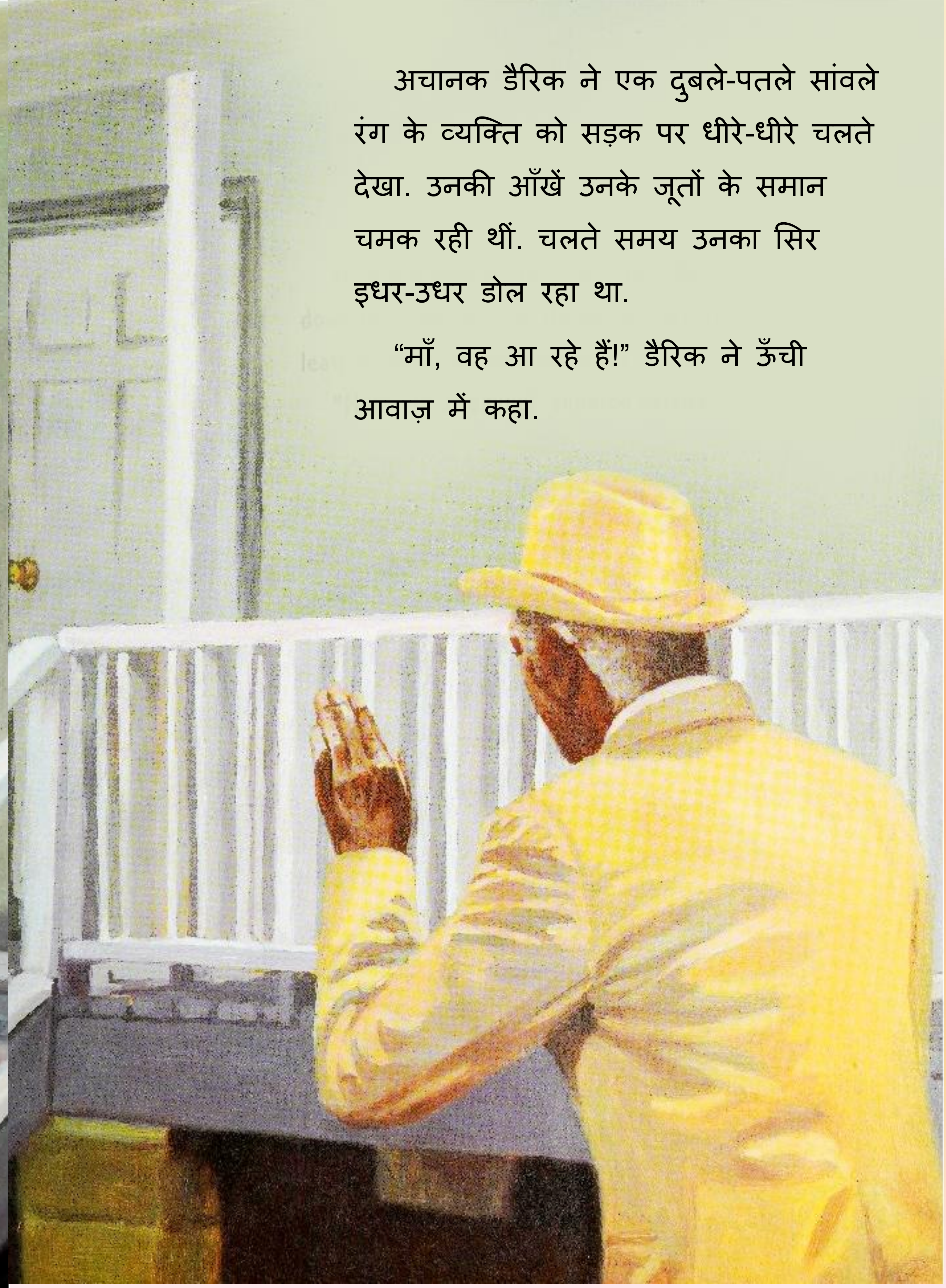




डैरिक का संगीत प्रेम



भीषण गर्मी थी. डैरिक के घर का बरामदा गर्मी से तप रहा था. लेकिन इस बात से वह बिलकुल परेशान न था. बरामदे में खड़ा वह तो अंकल बुकर टी की प्रतीक्षा कर रहा था. उस वृद्ध ने वचन दिया था कि गर्मियों में उसे हारमोनिका बजाना सिखायेंगे.



अचानक डैरिक ने एक दुबले-पतले सांवले रंग के व्यक्ति को सड़क पर धीरे-धीरे चलते देखा. उनकी आँखें उनके जूतों के समान चमक रही थीं. चलते समय उनका सिर इधर-उधर डोल रहा था.

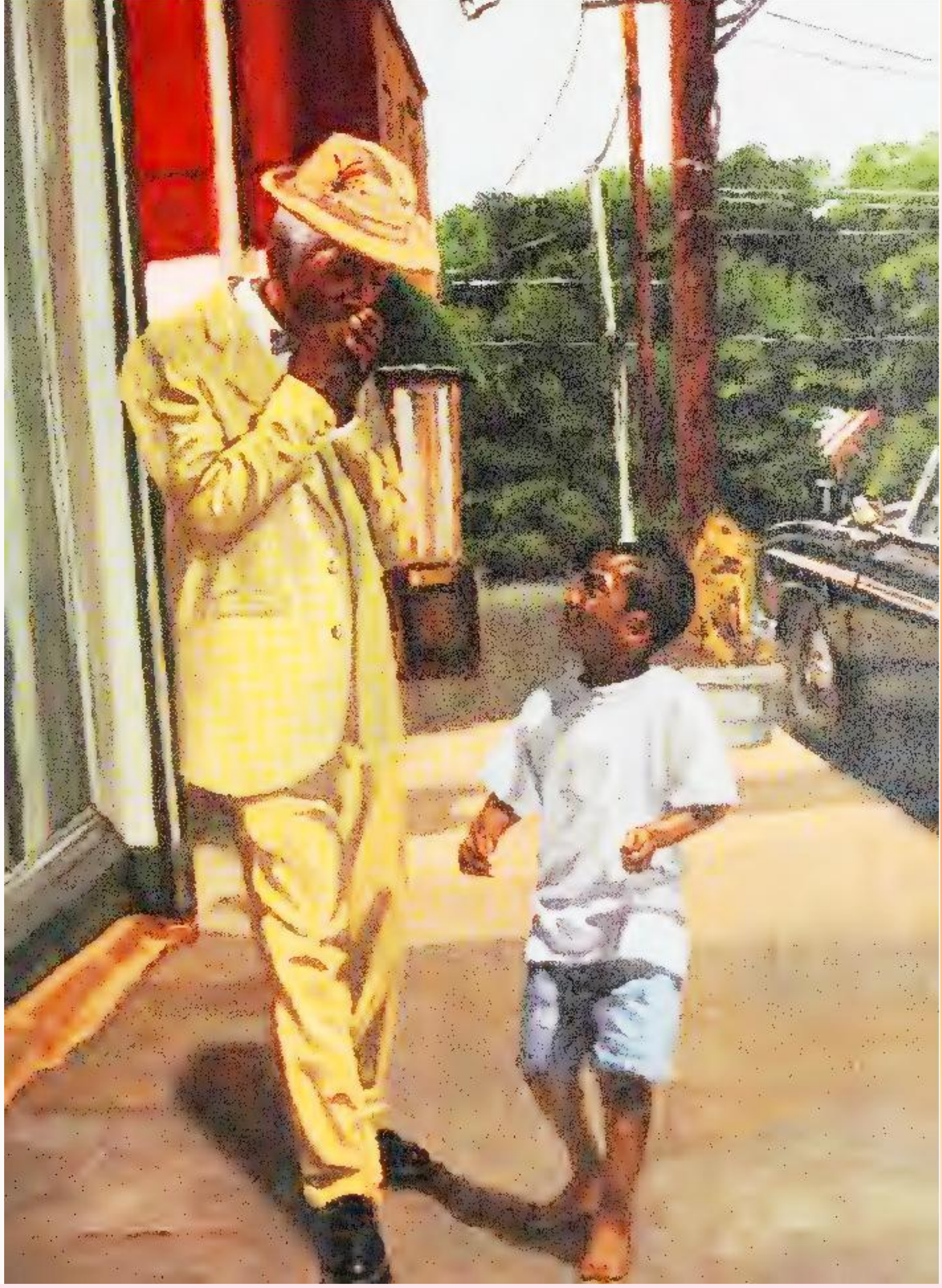
“माँ, वह आ रहे हैं!” डैरिक ने ऊँची आवाज़ में कहा.

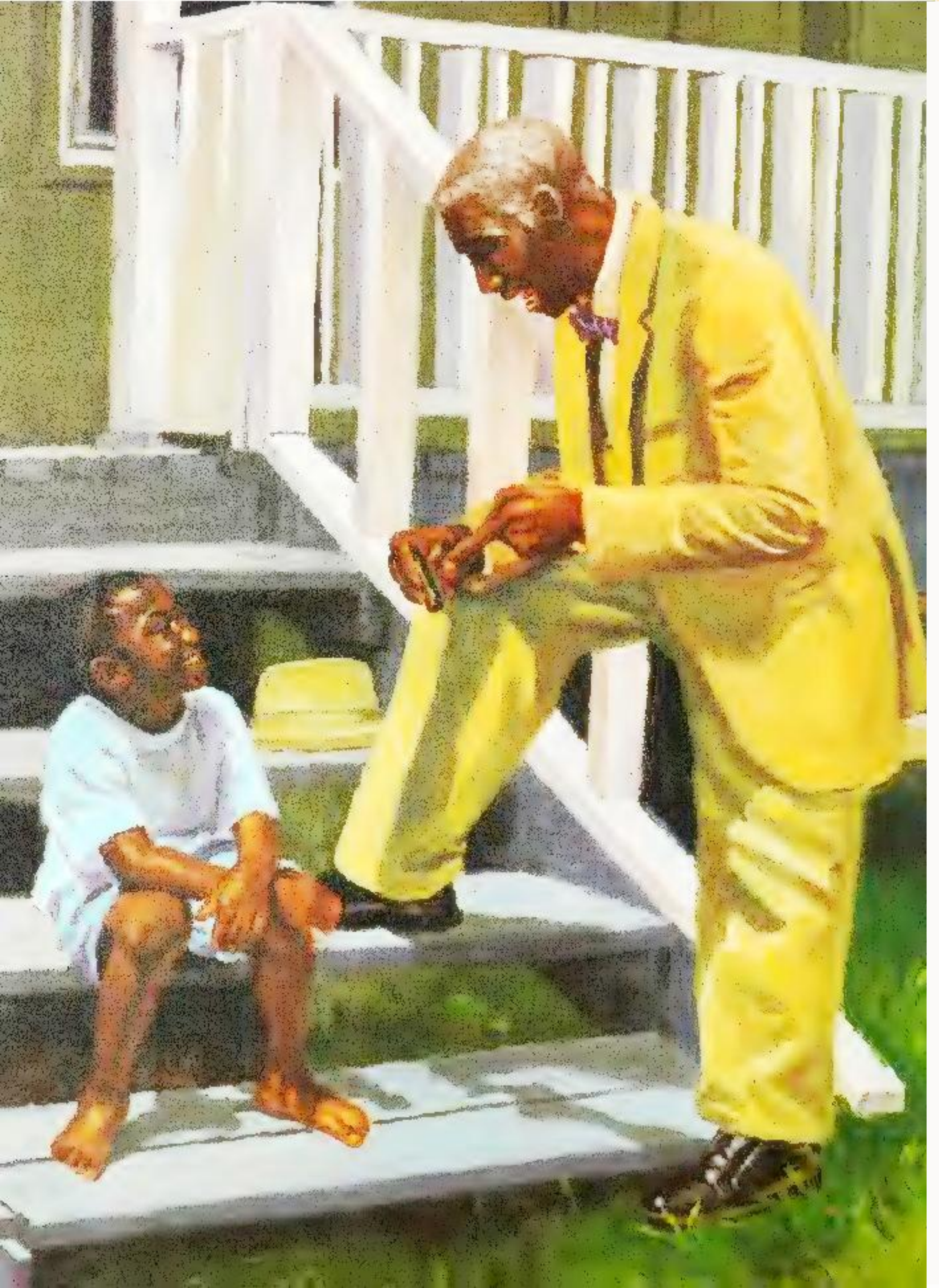
माँ ने पुकार कर कहा, “अंकल बुकर टी, मुझे खुशी है कि आप आ गए. इसे विश्वास था कि आप अपना वचन निभायेंगे.”

अंकल बुकर टी ने कहा, “वचन तो निभाने के लिए ही दिया जाता है. मेरे बूढ़े हाथ अभी भी संगीत बजा सकते हैं क्योंकि मेरे पिता ने मुझे अच्छी शिक्षा दी थी.

“आओ बेटा, हम तुम्हारे पड़ोस का एक चक्कर लगा कर आते हैं. हम ताक-झांक नहीं कर सकते. गर्मियाँ उतनी लंबी नहीं होती हैं जितनी लंबी दिखती हैं.”

डैरिक और अंकल बुकर टी तेज़ी से चलने लगे. वह एक लय के साथ चल रहे थे. अंकल बुकर टी बहुत ही मधुर संगीत बजा रहे थे. संगीत की मधुरता ने उन दोनों को पुरी तरह सम्मोहित सा कर दिया था. उन्होंने सारे नगर का एक चक्कर लगाया.





जैसे ही सूर्यास्त होने लगा, डैरिक के घर दोनों लौट आए और बरामदे में खड़े हो गए. अंकल बुकर टी ने अपना हारमोनिका डैरिक के हाथ में रख दिया. उस तरह डैरिक की संगीत शिक्षा आरंभ हुई.

डैरिक हारमोनिका बजा कर बेसुरी आवाज़ें निकालने लगा.

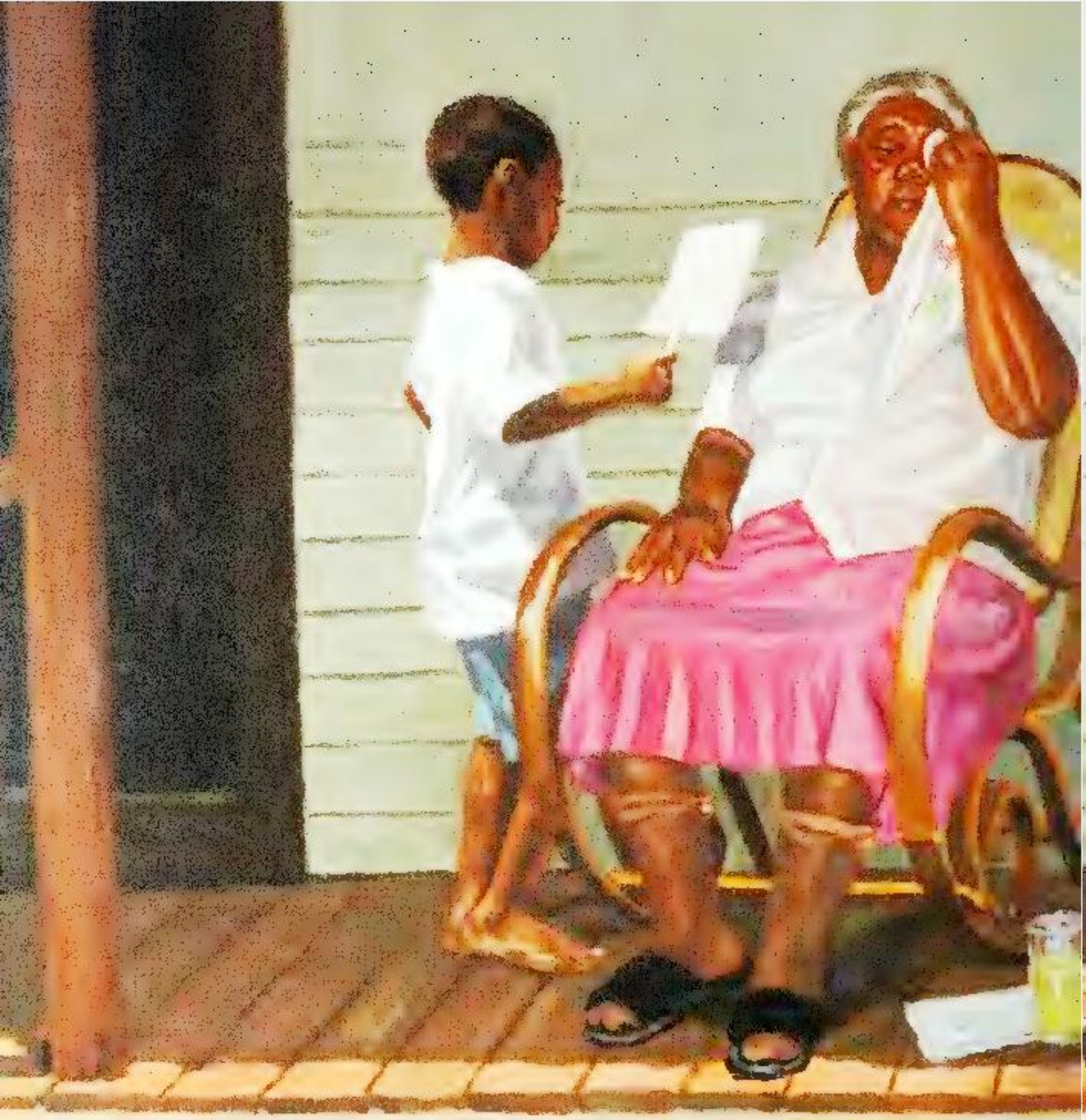
अंकल बुकर टी ने आह भरी. “धीरे! इतनी हड़बड़ी नहीं! टैड पोल रातों-रात मेंढक नहीं बन जाते. मेरे पिता ने मुझसे कहा था, ‘बुकर टी, हम संगीत कानों से सुनते हैं. पर हमें संगीत को दिल से महसूस करना होगा.’ इसलिए धीरे-धीरे, समय लगेगा. हर रात मेरा हार्मोनिका तुम अपने पास रख तक सकते हो.”

अंकल बुकर टी के जाने के बाद देर रात तक डैरिक हारमोनिका बजाने का अभ्यास करता रहा.

उसकी माँ ने कहा, “डैरिक, हारमोनिका रख दो. सोने का समय हो गया है.”

हारमोनिका अपने हाथ में दबाये, डैरिक सो गया.

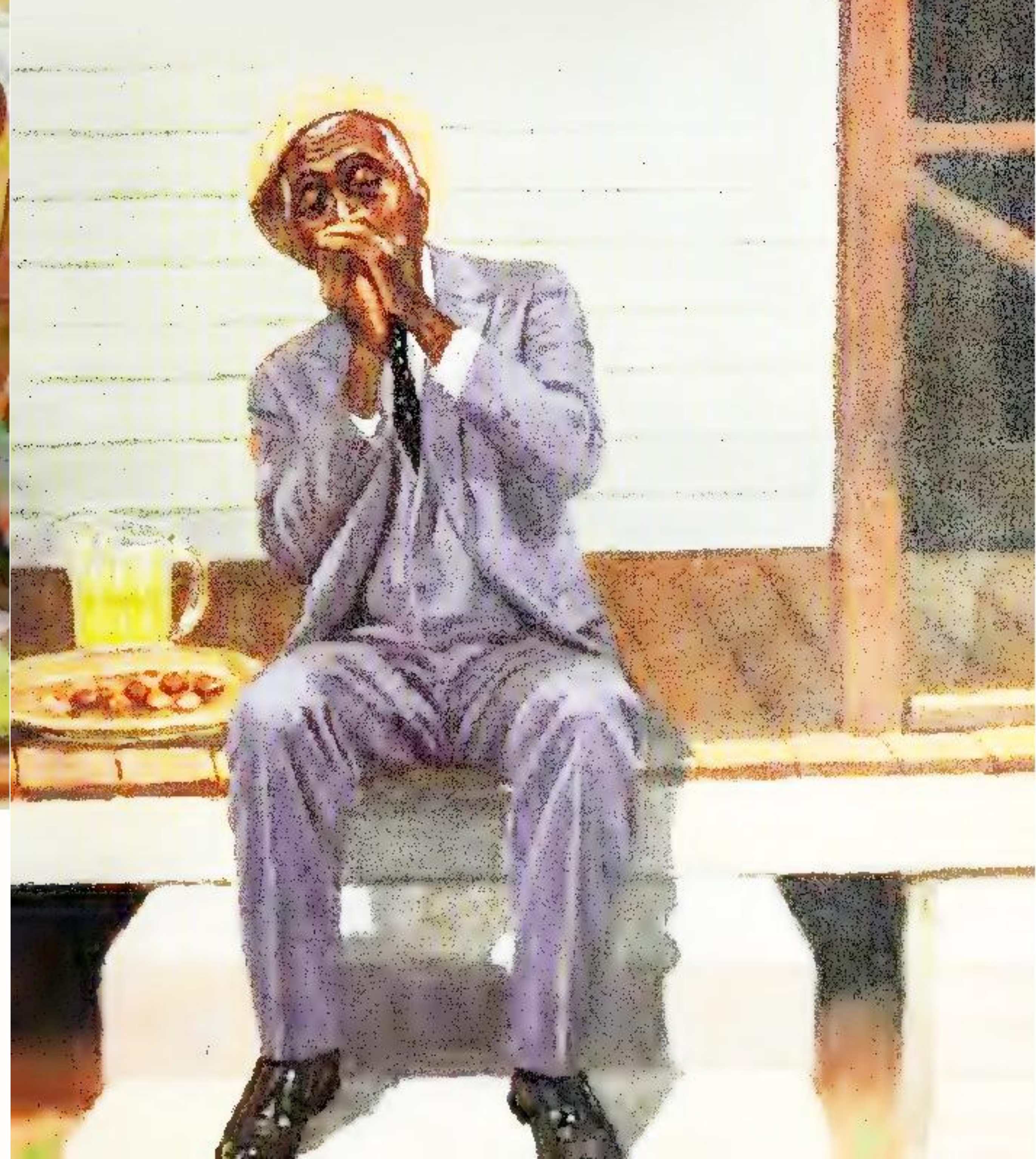




जैसे-जैसे गर्मी बढ़ी, डैरिक और अंकल बुकर टी की चाल भी धीमी हो गई. कई बार बड़ी माँ के घर के बरामदे में वह दोनों बैठ जाते. एक बड़ी तश्तरी में घर के बने केक और एक जग में नीबू पानी बड़ी माँ हमेशा तैयार रखती थीं.

“बुकर टी,” बड़ी माँ कहतीं, “मेरा प्रिय भजन बजाओ. मन को उत्साहित करने के लिए मैं एक भजन सुनना चाहती हूँ.”

अंकल बुकर टी ने अपनी आँखें बंद कीं. हारमोनिका को होंठों से छूआ. बड़े ध्यान से वह हारमोनिका बजाने लगे. धीमे और धीरे. धीरे और धीमे.





अगर हवा चल रही थी तो आंगन में लगे विशाल पेड़ उसे रोक रहे थे. लेकिन बड़ी माँ गर्मी की परवाह न कर रही थीं. गर्म हवा में वह अपनी बूढ़ी बाहें लहरा रही थीं और बीच-बीच में, “ओह, ईश्वर महान!” बोल रही थीं. उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे.

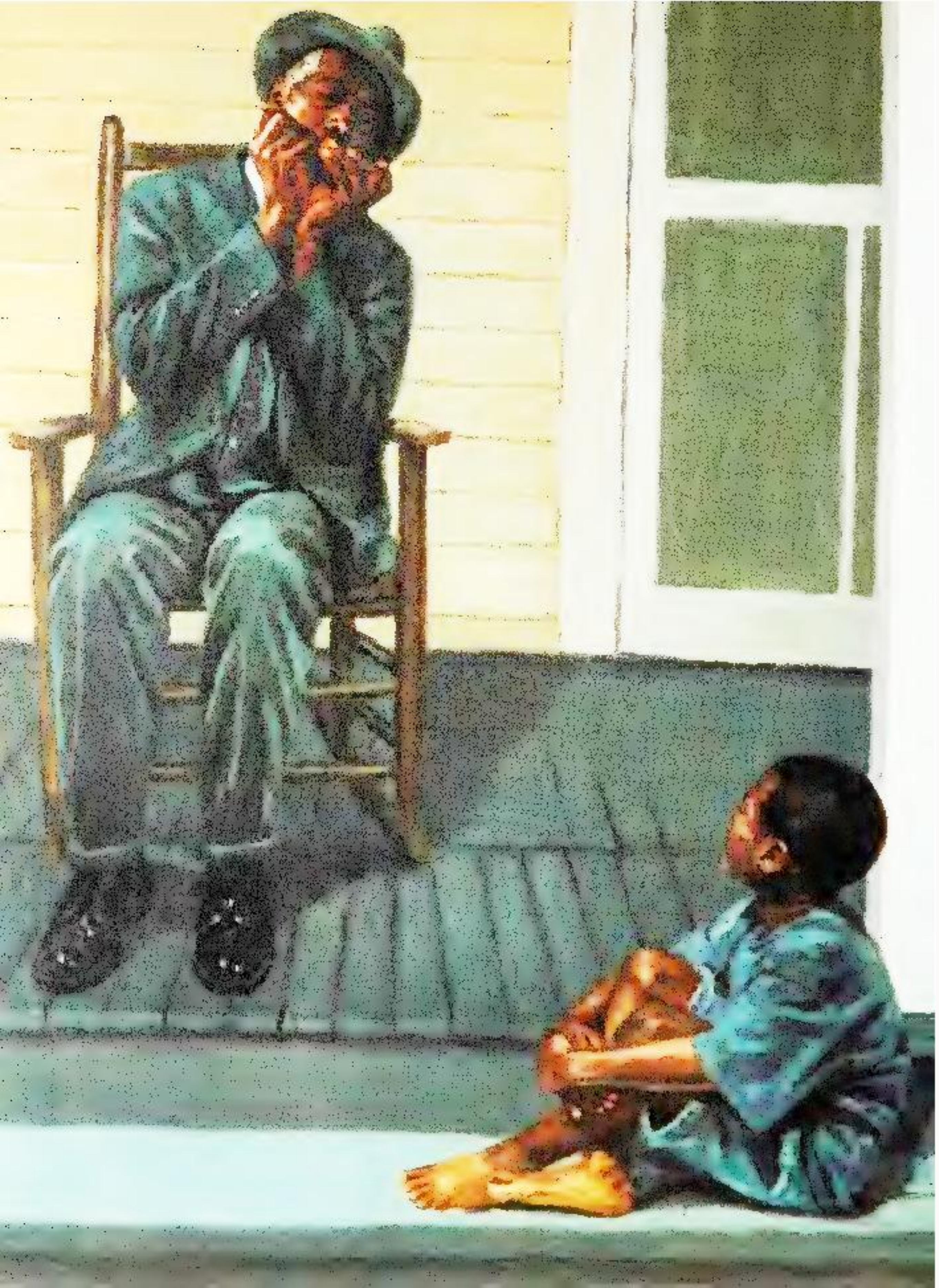
“बड़ी माँ,” डैरिक ने कहा. “आप रो क्यों हैं? क्या अंकल बुकर टी का संगीत आपको दुखी कर रहा है?”

बड़ी माँ ताली बजाने लगीं. “हे ईश्वर, अंकल बुकर टी के संगीत ने मेरे मन को झकझोर दिया है,” उन्होंने कहा. “मैं अपने उन स्वजनों के बारे में सोच रही हूँ जिन पर ईश्वर की कृपा हुई है. अगर बुकर टी ऐसे ही संगीत बजाते रहे तो यहीं पर एक चर्च बन जाएगी.”

अंकल बुकर टी ने कहा, “मैं तो बस वह गीत बजाता हूँ जो मैं जानता हूँ.”

उस रात संगीत का अभ्यास करने के बाद हारमोनिका को अपने माथे पर चिपका कर सोया.





कभी-कभी अंकल बुकर टी बरामदे में कुर्सी पर बैठ कर संगीत बजाते और डैरिक नीचे बैठ कर उन्हें सुनता. उन्होंने कहा, “मेरी गीत प्रसन्नता का गीत है. इसमें कोई शब्द नहीं हैं. बस मधुर संगीत है.”

अंकल बुकर टी झूमने लगते. ऐसा लगता कि जैसे हवा उन्हें इधर-उधर झुला रही थी. जब उन्होंने संगीत बजाना बंद किया, उनके हाथ पसीने से भीग गए थे.

उसके बाद भी संगीत की शिक्षा चलती रही. अंकल बुकर टी के, संगीत में पारंगत, हाथ डैरिक के हाथों को मार्गदर्शन करते.

सोने से पहले डैरिक ने फिर अभ्यास किया. फिर हारमोनिका को अपने माथे पर चिपका कर वह सो गया.



सूर्योदय से सूर्यास्त तक, एक गली से दूसरी गली तक, चलते-घूमते, घूमते-चलते सारा दिन संगीत. और हर गीत के बाद डैरिक पूछता, “अंकल बुकर टी, क्या अब मैं संगीत महसूस करने लगा हूँ?”

अंकल बुकर टी हर बार उत्तर देते, “हड़बड़ी न करो! और अभ्यास करो!”

सोमवार के दिन वह ऐगनिस आँटी के घर जाते. उस दिन वह कपड़े धोती थीं. कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर सफेद चद्दरें धूप में सूख रही होती थीं.

“ओह, बुकर टी! मेरे लिए जैज़ संगीत बजाओ,” ऐगनिस आँटी कहतीं.

अंकल बुकर टी बजाने लगते. मधुर संगीत की लहरें आंगन में फैल जातीं.

“मैं ऐसे संगीत को कहीं भी पहचान जाती,” ऐगनिस आंटी कहतीं. “ऐसा संगीत कहीं ओर से नहीं, सिर्फ दिल की गहराइयों से निकलता है. आओ डैरिक मैं तुम्हें इस संगीत की ताल पर नृत्य करना सिखाऊँ.”

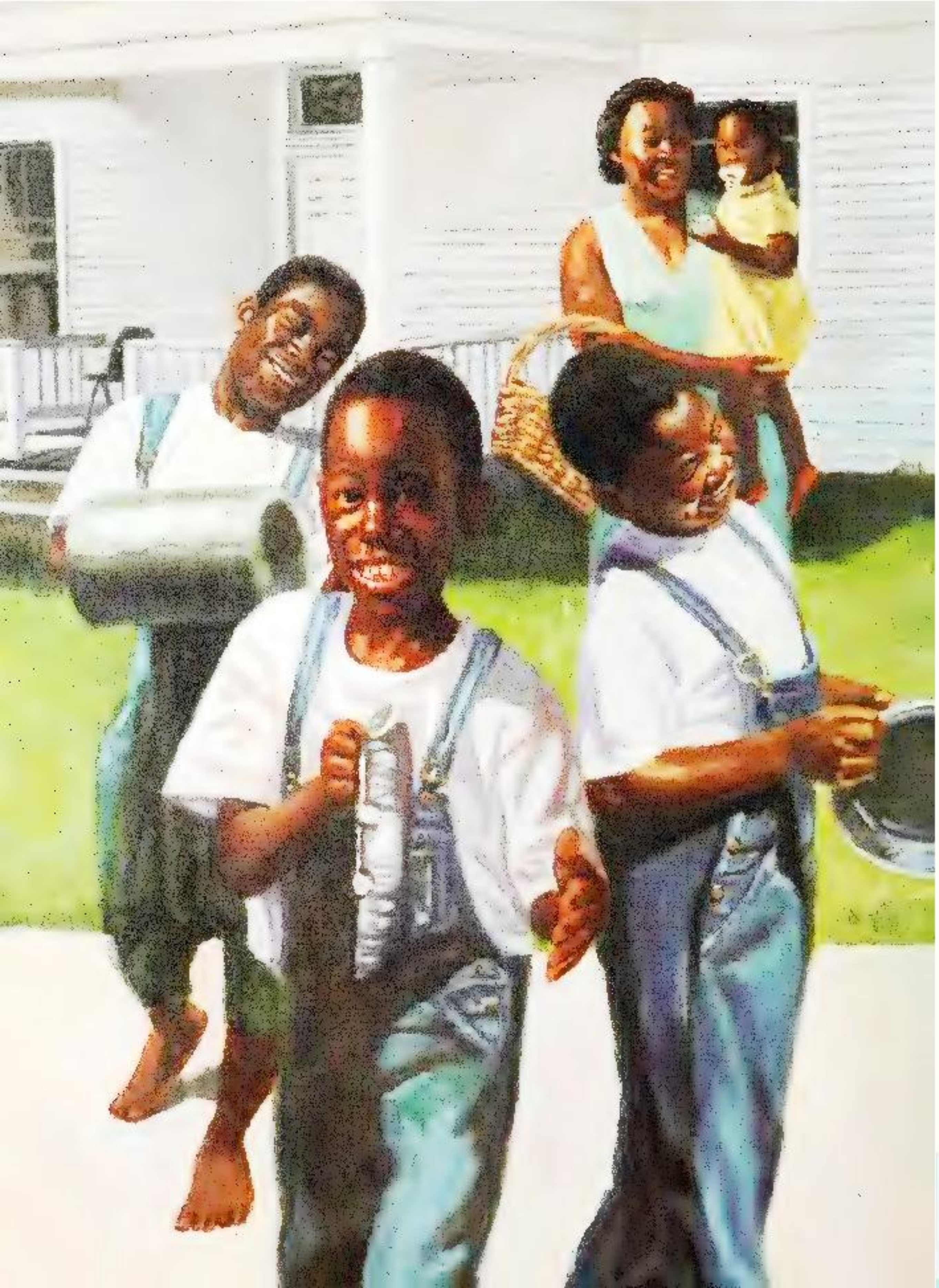


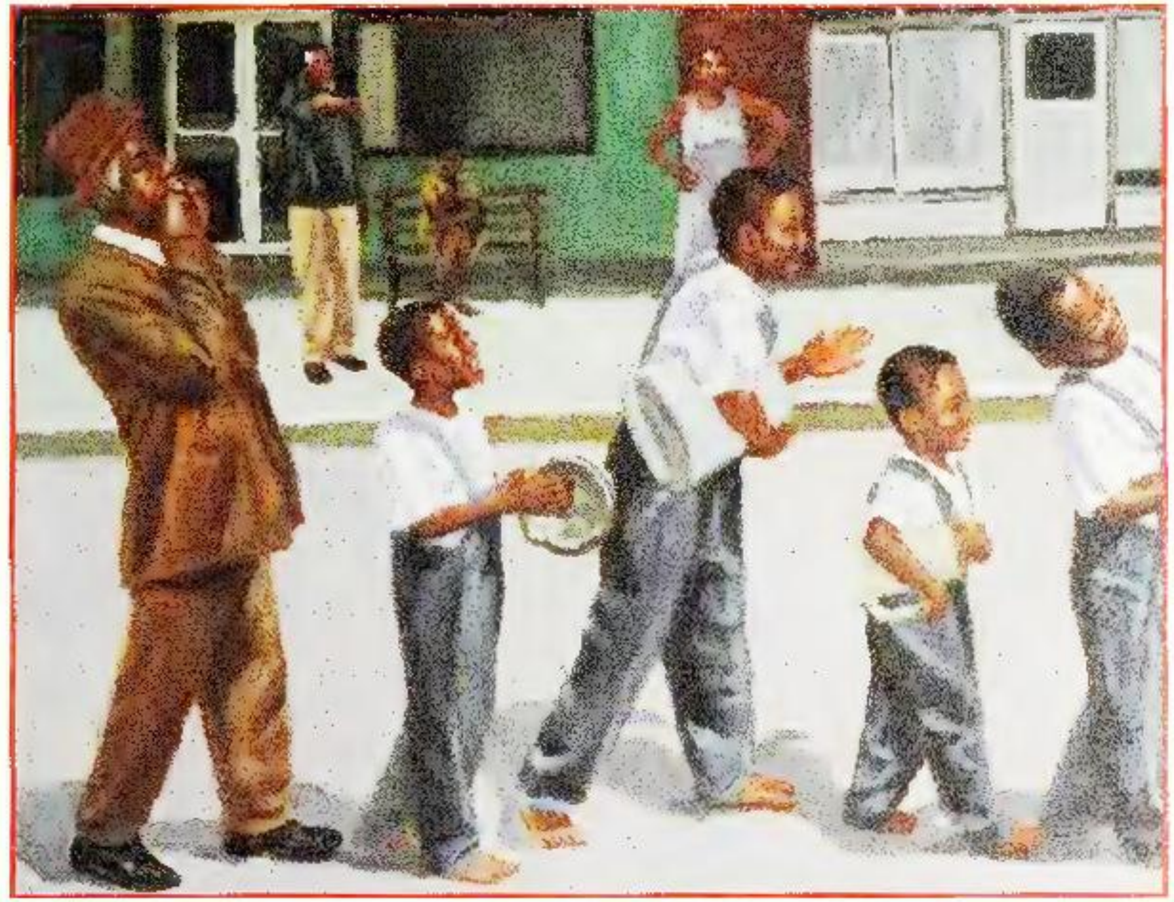


सांस लेते और हांफते, हांफते और सांस लेते. गर्मियों के सूरज के नीचे वह पसीने से भीग जाते. डैरिक नंगे पाँव नाचता. घूमता और मुड़ता, मुड़ता और घूमता. जब वह नाचना बंद करते, धुली हुई चद्दरें रस्सियों समान गोल हो गई होतीं. ऐगनिस आंटी की पीठ पर पसीने की बूंदे टपक रही होतीं.

“मैं कमाल का नृत्य करती हूँ! मैंने ड्युक एलिंगटन के संगीत पर संध्या से लेकर भोर तक नृत्य किया है. अब आप को जाना पड़ेगा. मुझे खाना पकाना है. इन सूखे, रस्सी समान लिपटे हुए, कपड़ों को तय कर इस्तरी करना है.”

इतना नृत्य करने के कारण उस रात डैरिक इतना थक गया था कि हारमोनिका बजाते-बजाते सो गया.





एक दिन अंकल बुकर टी और डैरिक एक मार्चिंग बैंड में सम्मिलित हुए. नगर के किनारे पर स्थित एक घर के सामने वह रुके. चार लड़के नंगे पांव भागते हुए बाहर आए, उनके पास डफली, घर के बनाए ड्रम और अलुमिनियम के पैन थे.

बैंग! बैंग! बोंग! बोंग चिंग! चैंग! ज़िंग! ज़ैंग!

लंबा जिम्मी, पतला लैरी और जुड़वां भाई कैविन और कैन एक ताल से संगीत बजा रहे थे. आंटी, अपने बच्चे लॉटोया को कमर पर टिकाये और दायें हाथ में पिकनिक की टोकरी पकड़े उन लड़कों के पीछे-पीछे थी.

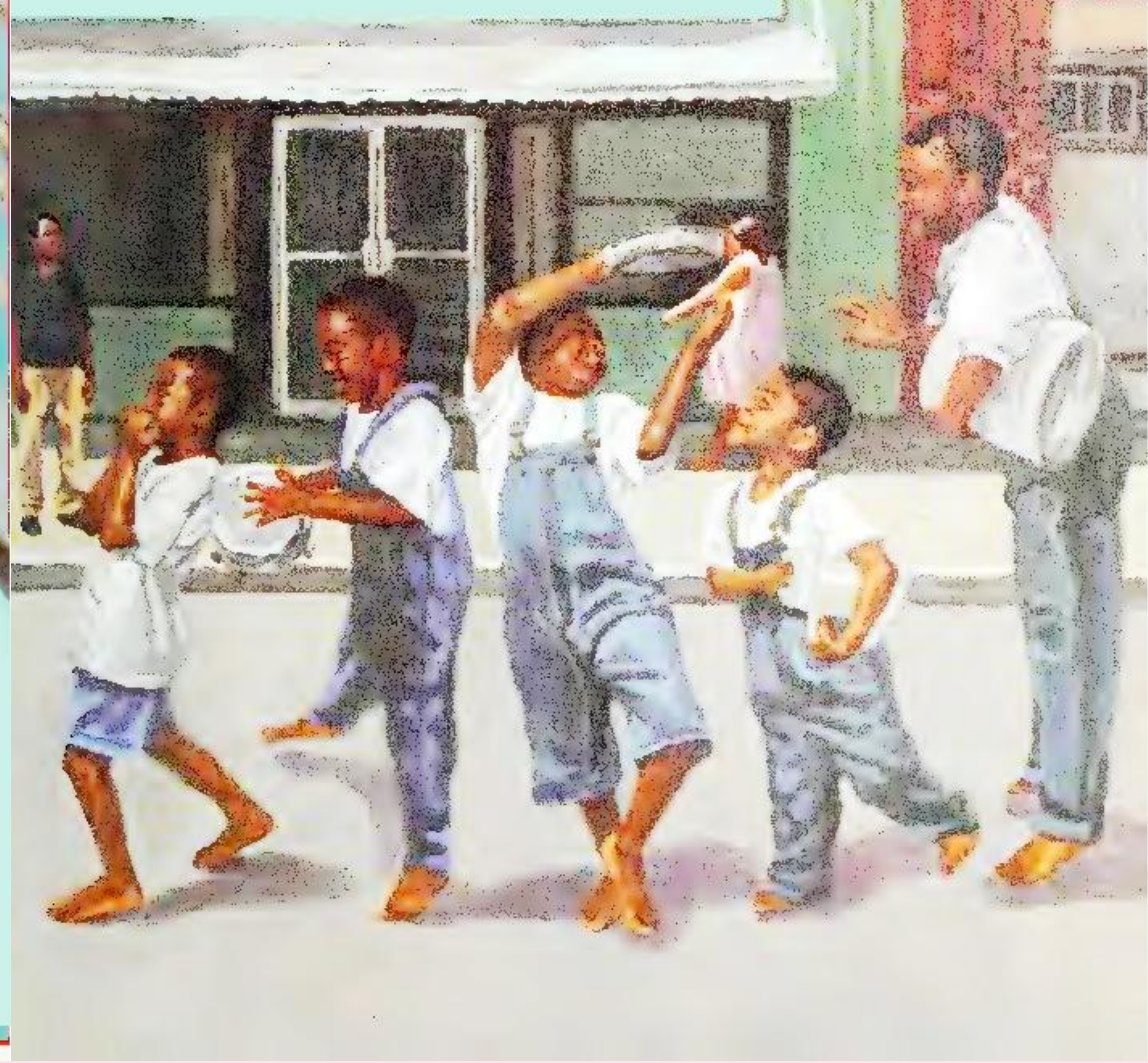
लड़के चिल्लाए, “हम आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे! हम क्या खेलेंगे?”

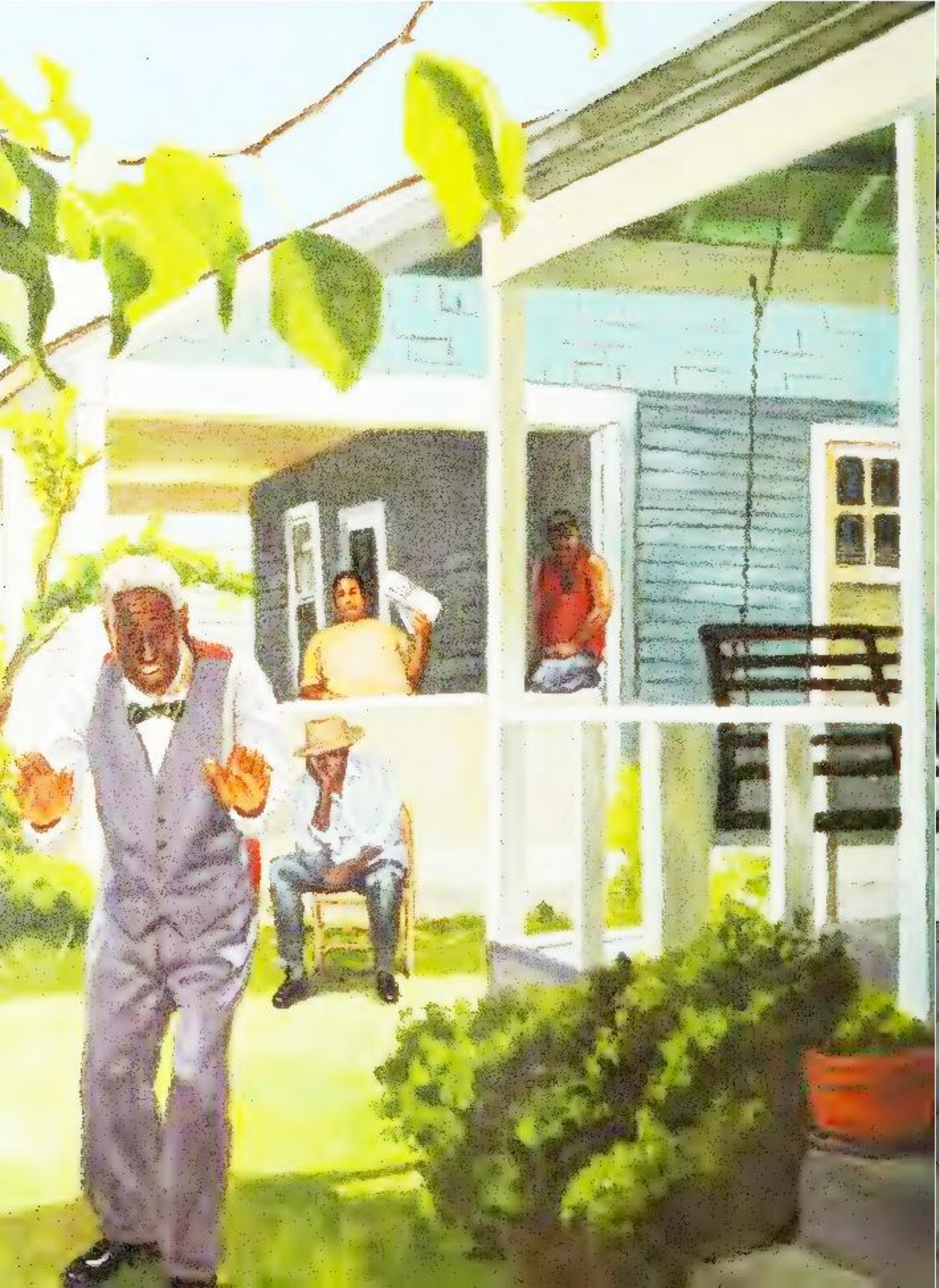
अंकल बुकर टी बोले, “जो तुम्हारा का मन करे वही खेलो.”



पड़ोस के पार्क पहुँचने तक लड़कों ने लय न छोड़ी. पार्क में संगीत बंद किया और खेल शुरु हुआ. स्लाइड पर ऊपर-नीचे जाते समय डैरिक कल्पना करने लगा कि जैसे वह हारमोनिका पर उंगलियाँ चला रहा था. कभी धीरे, कभी तेज़. लड़के चल न रहे थे, लगातार भाग रहा थे, चीखते, चिल्लाते, वह बातें न कर रहे थे.

दुपहर के खाने के बाद अंकल बुकर टी ने मार्चिंग धुन बजाई. लड़कों ने भी अपने वाद्य यंत्र उठा लिए. वह तेज़ गति से मार्च करते हुए, उलट-बाज़ियाँ मारते हुए, उछलते-कूदते हुए घर की ओर चल दिए. डैरिक सबसे आगे था. बैंग! बैंग! बोंग! बोंग चिंग! चैंग! ज़िंग! ज़ैंग!





एक दिन संध्या समय पड़ोसी अपने बरामदों में बैठ कर गपशप करते हुए मच्छर मार रहे थे. डैरिक अभ्यास कर रहा था और लोग उसका संगीत भी सुन रहे थे. वह उछला उसने अपनी आँखें बंद कीं और आगे-पीछे डोलने लगा. फिर वह हांफने लगा.

डैरिक ने पूछा, “अंकल बुकर टी, क्या मैं संगीत को अब महसूस कर पा रहा हूँ?”

“हड़बड़ी मत करो और अभ्यास करो!” अंकल बुकर टी ने हंसते हुए कहा.



सारी गर्मियों में डैरिक हारमोनिका को हाथ में पकड़े हुए ही सोया और खाना खाया. उसने तब तक विश्राम नहीं किया जब तक कि पतझड़ की ठंडी हवा न चलने लगी. डैरिक प्रतीक्षा करता रहा, करता रहा लेकिन अंकल बुकर टी नहीं आए. डैरिक अंकल बुकर टी के घर गया और उन्हें अपने बरामदे में बैठा पाया. उन्होंने अपने दुबले-पतले शरीर पर एक स्वेटर पहन रखा था.

“अंकल बुकर टी, आप क्यों नहीं आए?” डैरिक ने पूछा. “आप अपना हारमोनिका वापस ले जाना भूल गए.”

“बेटा, वृद्ध आर्थर आज सुबह ही आया. अब मैं उसके वश में हूँ. आज संगीत नहीं होगा.”

“वृद्ध आर्थर? वह कौन है?” डैरिक ने पूछा.

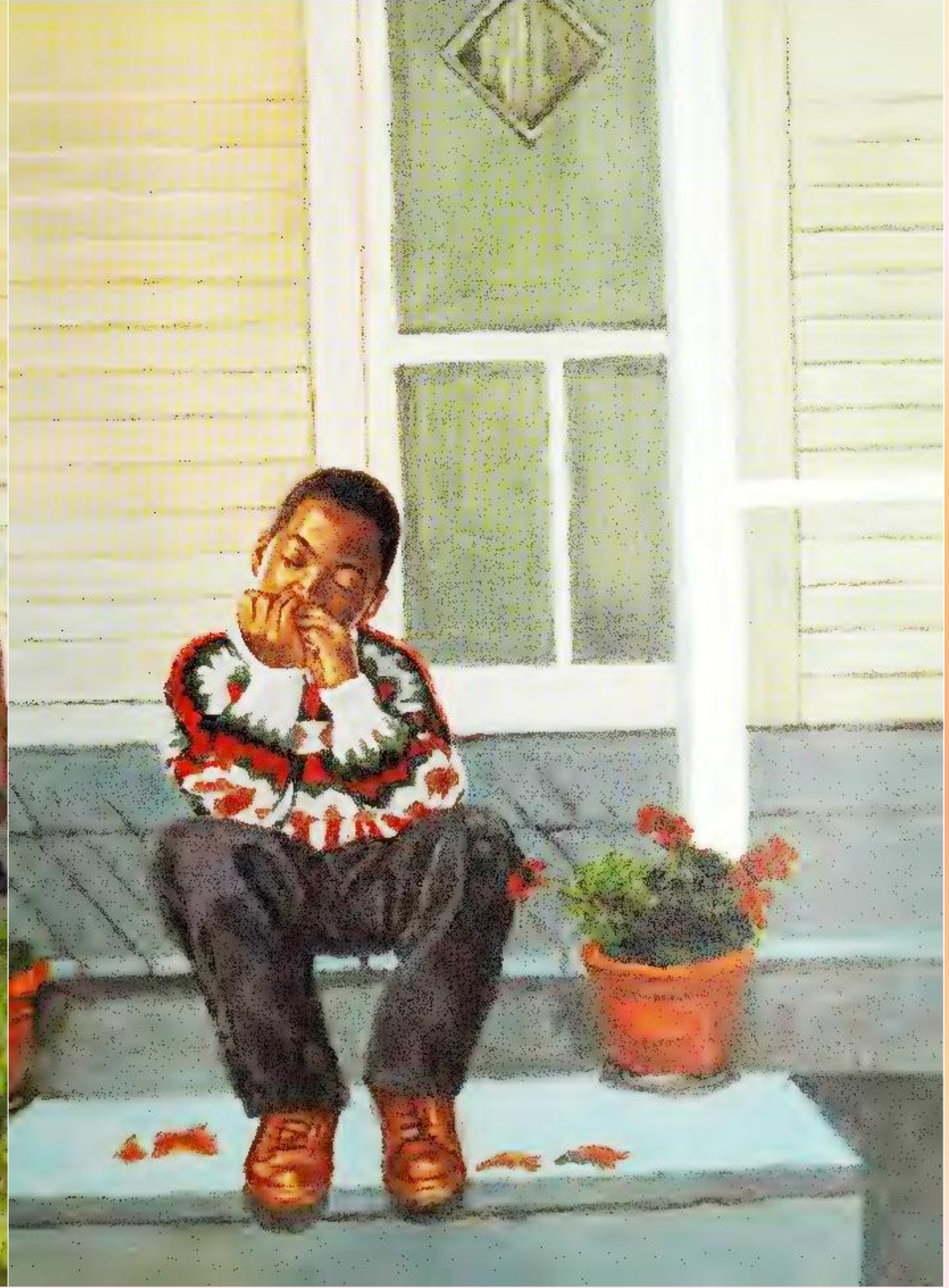
“क्या तुम्हारी माँ ने कभी आर्थाइट्स (गठिया) के बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया? मुझे जोड़ों में दर्द हो रहा है,” अंकल बुकर टी ने कहा.

डैरिक ने अंकल बुकर टी की हाथों के देखा, उंगलियाँ मुड़ी हुई थीं और गांठे पड़ी हुई थीं. अचानक डैरिक को आभास हुआ कि क्या बात अंकल बुकर टी को खुशी देगी.





डैरिक ने जेब से हारमोनिका निकाला और गहरी सांस ली. वह हारमोनिका बजाने लगा. बहुत धीमी आवाज़ में, बहुत धीरे. फिर उसने गति धीरे-धीरे बढ़ा दी. कोई शब्द न थे. सिर्फ संगीत, मधुर संगीत. हारमोनिका पर उसकी उंगलियाँ चलती रही थीं और लय के साथ वह आगे-पीछे डोल रहा था. उसने हारमोनिका में प्राण फूंक दिए.



जब गीत समाप्त हुआ, डैरिक ने अपनी आँखें खोलीं और मुस्कराया. पसीने से उसके हाथ भीग गए थे. अंकल बुकर टी ने अपनी आँखों से आँसू पोंछे. वह खड़े हुए और बोले, "बहुत खूब! हाँ, निःसंदेह! निःसंदेह!"

उन्होंने डैरिक को गले लगाया. डैरिक चुप रहा. वह जान गया था.

"डैरिक, यह हारमोनिका तुम्हारा है," अंकल बुकर टी ने कहा. "अब यह सिर्फ मेरा नहीं हो सकता. कभी-कभी अपनी प्रिय वस्तुएं भी दूसरों को दे देनी चाहिएं. इसे अपने पास रखो और मेरे जाने के बाद भी इसे जीवंत रखना."

अंकल बुकर टी और डैरिक झटपट चलने लगे, एक साथ बिलकुल जुड़ कर. हवा की सुगंध को महसूस करते हुए, मुड़ते और घूमते, घूमते और मुड़ते हुए वह चलते रहे. यद्यपि वह दोनों इन रास्तों पर कई बार चल चुके थे, पर ऐसी प्रसन्नता उन्हें पहले कभी न मिली थी जैसी आज मिली थी.

रात्रि दूर थी और दिन में बहुत संगीत अभी शेष था.

